SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.81

भारत–नेपाल संबंधों में चीन की बढ़ती भूमिका: सामरिक, आर्थिक एवं भू-राजनीतिक चुनौतियों का अध्ययन

डॉ. महेंद्र प्रताप यादव[1], सतीश कुमार दूबे[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, गनपत सहाय पी. जी. कॉलेज, सुल्तानपुर
[2]शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन, गनपत सहाय पी. जी. कॉलेज, सुल्तानपुर

प्रस्तावना

भारत और नेपाल के संबंध दक्षिण एशिया की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान रखते हैं। दोनों देशों के बीच भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक संपर्क, सामाजिक-सांस्कृतिक समानताएँ, आर्थिक निर्भरता तथा लोगों के बीच गहरे संबंधों ने द्विपक्षीय संबंधों को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंध तथा नागरिकों का पारस्परिक आवागमन दोनों देशों के संबंधों को केवल राजनयिक स्तर तक सीमित नहीं रहने देता, बल्कि इन्हें जन-से-जन संबंधों का स्वरूप प्रदान करता है। वर्ष 1950 की भारत–नेपाल शांति एवं मैत्री संधि ने दोनों देशों के पारंपरिक संबंधों को संस्थागत आधार प्रदान किया। इसके पश्चात व्यापार, ऊर्जा, जल संसाधन, सुरक्षा, परिवहन तथा विकास सहयोग के अनेक क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार हुआ है। हालाँकि, वर्तमान समय में भारत–नेपाल संबंधों को केवल द्विपक्षीय दृष्टिकोण से समझना पर्याप्त नहीं है। नेपाल की भौगोलिक स्थिति भारत और चीन दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। नेपाल एक ओर भारत के साथ लंबी खुली सीमा साझा करता है, वहीं दूसरी ओर उसकी उत्तरी सीमा चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र से जुड़ी हुई है। इस कारण नेपाल हिमालयी भू-राजनीति तथा भारत–चीन सामरिक प्रतिस्पर्धा के बीच एक महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र बन गया है। विशेष रूप से पिछले कुछ दशकों में चीन ने नेपाल में अपनी आर्थिक, राजनीतिक, कूटनीतिक एवं अवसंरचनात्मक उपस्थिति को बढ़ाया है। सड़क, रेल, ऊर्जा, पर्यटन, संचार तथा अन्य बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में चीन की सक्रियता ने नेपाल की विदेश नीति और क्षेत्रीय भू-राजनीति को प्रभावित किया है। चीन की **Belt and Road Initiative (BRI)** में नेपाल की भागीदारी ने भारत–नेपाल संबंधों में एक नया सामरिक आयाम जोड़ दिया है। चीन द्वारा नेपाल के साथ सीमा-पार संपर्क तथा अवसंरचना विकास को बढ़ावा देने के प्रयासों को जहाँ नेपाल आर्थिक विकास और वैकल्पिक संपर्क के अवसर के रूप में देखता है, वहीं भारत के लिए इसके सुरक्षा एवं सामरिक निहितार्थ भी महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में चीन की बढ़ती गतिविधियाँ, तिब्बत से संबंधित सुरक्षा प्रश्न, सीमा-पार कनेक्टिविटी तथा नेपाल की विदेश नीति में संभावित चीनी प्रभाव भारत की सुरक्षा-चिंताओं को प्रभावित करते हैं। इसके साथ ही नेपाल स्वयं भी भारत और चीन के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास करता रहा है। नेपाल के लिए भारत पारंपरिक आर्थिक एवं सामाजिक साझेदार है, जबकि चीन उसके लिए निवेश, अवसंरचना और वैकल्पिक व्यापारिक संपर्क का महत्वपूर्ण स्रोत बन रहा है। इसलिए नेपाल की विदेश नीति में दोनों शक्तियों के बीच संतुलन स्थापित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। दूसरी ओर, भारत के सामने यह प्रश्न है कि वह नेपाल के साथ अपने ऐतिहासिक एवं

जन-आधारित संबंधों को मजबूत करते हुए चीन की बढ़ती भूमिका से उत्पन्न सामरिक चुनौतियों का किस प्रकार सामना करे। भारत–नेपाल संबंधों में चीन की बढ़ती भूमिका का अध्ययन केवल द्विपक्षीय संबंधों का विषय नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया की बदलती भू-राजनीति, हिमालयी सुरक्षा, भारत–चीन प्रतिस्पर्धा और क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। अतः प्रस्तुत अध्ययन भारत–नेपाल संबंधों के ऐतिहासिक आधार, चीन की बढ़ती उपस्थिति, उसके सामरिक एवं आर्थिक प्रभाव तथा भारत के लिए उत्पन्न चुनौतियों और संभावित नीति विकल्पों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

1. भारत–नेपाल संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और नेपाल के संबंध दक्षिण एशिया के सबसे पुराने, बहुआयामी और विशिष्ट द्विपक्षीय संबंधों में सम्मिलित हैं। दोनों देशों के बीच संबंधों की प्रकृति केवल आधुनिक राजनयिक संपर्कों तक सीमित नहीं है, बल्कि इनके आधार में प्राचीन ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा भौगोलिक संबंध निहित हैं। हिमालय और गंगा के मैदानों के मध्य स्थित नेपाल का भारत के साथ प्राचीन काल से ही निरंतर संपर्क रहा है। बौद्ध एवं हिंदू धार्मिक परंपराओं ने दोनों समाजों को गहरे स्तर पर जोड़ा है। नेपाल का लुंबिनी भगवान बुद्ध की जन्मस्थली के रूप में तथा भारत के बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर बौद्ध परंपरा के प्रमुख केंद्रों के रूप में दोनों देशों के ऐतिहासिक एवं धार्मिक संबंधों को मजबूत करते हैं। इसी प्रकार जनकपुर और अयोध्या के बीच धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंध भी भारत–नेपाल मैत्री के महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। प्राचीन एवं मध्यकालीन अवधि में भारत और नेपाल के बीच व्यापार, तीर्थयात्रा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और जनसंपर्क निरंतर विकसित होते रहे। हिमालयी क्षेत्र के व्यापारिक मार्गों ने नेपाल को भारतीय उपमहाद्वीप और तिब्बत के बीच संपर्क का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया। भारतीय मैदानों और नेपाली पहाड़ी क्षेत्रों के बीच वस्तुओं, विचारों और लोगों का आवागमन दोनों समाजों के पारस्परिक संबंधों को गहरा करता रहा। इस ऐतिहासिक संपर्क के कारण भारत और नेपाल के बीच सामाजिक संबंधों में औपचारिक राजनीतिक सीमाओं की तुलना में अधिक लचीलापन दिखाई देता है। आधुनिक भारत–नेपाल संबंधों के विकास में ब्रिटिश भारत और नेपाल के बीच हुए राजनीतिक संपर्कों का महत्वपूर्ण स्थान है। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में गोरखा शक्ति के विस्तार के कारण नेपाल और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के हितों में टकराव उत्पन्न हुआ। इसके परिणामस्वरूप 1814–1816 का एंग्लो-नेपाली युद्ध हुआ। युद्ध के बाद 1816 की सुगौली संधि ने दोनों पक्षों के बीच संबंधों की नई राजनीतिक एवं भौगोलिक व्यवस्था स्थापित की। इस संधि के माध्यम से नेपाल के क्षेत्रीय विस्तार पर सीमाएँ निर्धारित हुईं और ब्रिटिश भारत तथा नेपाल के बीच राजनीतिक संबंधों का एक नया चरण प्रारंभ हुआ। इसके बाद दोनों के बीच सहयोग तथा संपर्क के अनेक क्षेत्र विकसित हुए। विशेष रूप से गोरखा सैनिकों की ब्रिटिश भारतीय सेना में भर्ती ने सैन्य एवं सामाजिक संबंधों को एक विशिष्ट आयाम प्रदान किया, जिसकी परंपरा स्वतंत्र भारत में भी जारी रही।

1947 में भारत की स्वतंत्रता और 1950 में नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन के बाद दोनों देशों के संबंधों को आधुनिक कूटनीतिक आधार मिला। 1950 में भारत और नेपाल के बीच **शांति एवं मैत्री संधि** पर हस्ताक्षर हुए। यह संधि द्विपक्षीय संबंधों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी। इसने दोनों देशों के बीच शांति, मैत्री और सहयोग को संस्थागत आधार प्रदान किया तथा नागरिकों की आवाजाही, आर्थिक गतिविधियों और पारस्परिक सहयोग के लिए महत्वपूर्ण वातावरण बनाया। हालांकि समय के साथ संधि की कुछ व्यवस्थाओं को लेकर नेपाल में बहस और आलोचना भी सामने आती रही। नेपाल के विभिन्न राजनीतिक समूहों ने इसे समय-समय पर असमान समझौते के रूप में देखा और इसमें संशोधन अथवा पुनरावलोकन की मांग की। इसके बावजूद 1950 की संधि भारत–नेपाल संबंधों की संरचना में केंद्रीय महत्व रखती है। 1950 और 1960 के दशकों में भारत ने नेपाल के आर्थिक विकास और आधारभूत संरचना निर्माण में सहयोग किया। सड़कों, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य विकास परियोजनाओं में भारतीय सहायता ने दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को मजबूत किया। भारत नेपाल के लिए प्रमुख व्यापारिक साझेदार और पारगमन मार्ग का महत्वपूर्ण स्रोत बना रहा। नेपाल की समुद्र तक पहुँच के लिए भारतीय भू-भाग का महत्व अत्यधिक रहा है। इसके अतिरिक्त दोनों देशों के बीच खुली सीमा ने

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

व्यापार और रोजगार के साथ-साथ सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों को भी मजबूत किया। भारत–नेपाल संबंधों में जल संसाधन सहयोग भी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है। हिमालय से निकलने वाली नदियाँ नेपाल और भारत दोनों के लिए कृषि, सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण और ऊर्जा उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। कोसी, गंडक और महाकाली जैसी नदियों से संबंधित समझौतों ने जल संसाधन सहयोग को संस्थागत स्वरूप देने का प्रयास किया। हालांकि जल परियोजनाओं से संबंधित लाभों के वितरण, संप्रभुता, पर्यावरणीय प्रभाव और स्थानीय हितों को लेकर दोनों देशों के बीच समय-समय पर मतभेद भी उत्पन्न हुए। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत–नेपाल संबंधों में सहयोग और विवाद दोनों समानांतर रूप से मौजूद रहे हैं। नेपाल में 1990 के दशक से बहुदलीय लोकतंत्र के पुनर्स्थापन, उसके बाद माओवादी आंदोलन, राजतंत्र की समाप्ति और 2008 में संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना ने भारत–नेपाल संबंधों को नए राजनीतिक संदर्भ प्रदान किए। नेपाल की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता का प्रभाव उसके विदेश नीति-निर्माण पर भी पड़ा। भारत ने नेपाल की शांति प्रक्रिया और लोकतांत्रिक संक्रमण में विभिन्न स्तरों पर सहयोग किया, लेकिन नेपाल की घरेलू राजनीति में भारत की भूमिका को लेकर समय-समय पर राजनीतिक बहस भी हुई।

इक्कीसवीं शताब्दी में भारत–नेपाल संबंधों में आर्थिक सहयोग के साथ-साथ सुरक्षा, ऊर्जा, संपर्क और सीमा प्रबंधन के मुद्दों का महत्व बढ़ा। भारत ने नेपाल में सड़क, रेल, एकीकृत चेक पोस्ट, पेट्रोलियम पाइपलाइन तथा विद्युत संपर्क जैसी परियोजनाओं को आगे बढ़ाया। ऊर्जा के क्षेत्र में नेपाल की जलविद्युत क्षमता भारत के लिए भी महत्वपूर्ण है, जबकि नेपाल के लिए भारतीय बाजार में बिजली निर्यात आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण अवसर बन रहा है। इस प्रकार दोनों देशों के संबंध पारंपरिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संपर्क से आगे बढ़कर आर्थिक एवं रणनीतिक साझेदारी की दिशा में विकसित हुए हैं। हाल के वर्षों में सीमा संबंधी प्रश्नों ने द्विपक्षीय संबंधों को चुनौती दी है। विशेष रूप से कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा से जुड़े सीमा विवाद ने दोनों देशों में राजनीतिक एवं जनमत स्तर पर संवेदनशीलता उत्पन्न की। 2019 में भारत द्वारा नया राजनीतिक मानचित्र जारी किए जाने और 2020 में नेपाल द्वारा संशोधित मानचित्र जारी किए जाने के बाद विवाद ने अधिक गंभीर रूप ग्रहण किया। हालांकि दोनों देशों के बीच संवाद और कूटनीतिक माध्यमों से समस्याओं के समाधान की आवश्यकता पर जोर दिया जाता रहा है। सीमा विवाद यह दर्शाता है कि ऐतिहासिक निकटता के बावजूद संप्रभुता और राष्ट्रीय हित से जुड़े प्रश्न द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। भारत–नेपाल संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझते समय चीन के कारक को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। नेपाल की भौगोलिक स्थिति भारत और चीन के बीच स्थित होने के कारण वह हिमालयी भू-राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विशेषकर इक्कीसवीं शताब्दी में नेपाल और चीन के बीच आर्थिक, अवसंरचनात्मक तथा राजनीतिक संपर्क बढ़ा है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में नेपाल की भागीदारी ने भारत–नेपाल संबंधों में एक अतिरिक्त सामरिक आयाम जोड़ दिया है। इससे नेपाल के लिए वैकल्पिक आर्थिक एवं संपर्क अवसर बढ़े हैं, जबकि भारत के लिए हिमालयी क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति एक महत्वपूर्ण सामरिक चिंता बनकर उभरी है। भारत–नेपाल संबंधों का इतिहास प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक संपर्क से प्रारंभ होकर औपनिवेशिक काल की राजनीतिक व्यवस्थाओं, 1950 की शांति एवं मैत्री संधि, आर्थिक एवं विकास सहयोग, खुली सीमा, जल संसाधन, सुरक्षा तथा आधुनिक भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तक विस्तृत है। इन संबंधों की मूल विशेषता पारस्परिक निर्भरता और जन-स्तरीय निकटता है, किंतु सीमा विवाद, राजनीतिक मतभेद, आर्थिक असंतुलन तथा चीन की बढ़ती भूमिका जैसी चुनौतियाँ भी इनके सामने मौजूद हैं। इसलिए वर्तमान भारत–नेपाल संबंधों को समझने के लिए ऐतिहासिक विरासत के साथ-साथ बदलते क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन और हिमालयी भू-राजनीति का अध्ययन आवश्यक है।

2. भारत–नेपाल सीमा विवाद: कालापानी, लिपुलेख एवं लिम्पियाधुरा

भारत और नेपाल के बीच संबंध ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यंत घनिष्ठ रहे हैं, किंतु इन संबंधों के बीच सीमा से जुड़े कुछ विवाद लंबे समय से मौजूद हैं। इनमें कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा का विवाद सबसे महत्वपूर्ण है। यह विवाद केवल कुछ वर्ग किलोमीटर भू-भाग के स्वामित्व का प्रश्न नहीं है, बल्कि इसमें ऐतिहासिक दस्तावेजों, मानचित्रों, नदी की उत्पत्ति, सीमा-निर्धारण, राष्ट्रीय संप्रभुता तथा दोनों देशों

की सुरक्षा संबंधी चिंताएँ जुड़ी हुई हैं। विशेष रूप से 2019–20 के घटनाक्रम के बाद यह मुद्दा भारत–नेपाल संबंधों में अत्यधिक संवेदनशील राजनीतिक एवं कूटनीतिक विषय बन गया। भारत–नेपाल सीमा की आधुनिक व्यवस्था को समझने के लिए 1816 की सुगौली संधि का उल्लेख आवश्यक है। एंग्लो-नेपाली युद्ध के बाद हुई इस संधि ने ब्रिटिश भारत और नेपाल के बीच क्षेत्रीय सीमाओं को निर्धारित करने का आधार प्रदान किया। पश्चिमी क्षेत्र में महाकाली नदी को सीमा निर्धारण के प्रमुख आधारों में से एक माना गया। विवाद का महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि महाकाली नदी का वास्तविक उद्गम किस स्थान से माना जाए। नेपाल का दावा है कि नदी का उद्गम लिम्पियाधुरा के निकट से होता है और इसलिए लिम्पियाधुरा, कालापानी तथा लिपुलेख क्षेत्र नेपाल की सीमा के भीतर आते हैं। भारत इस व्याख्या को स्वीकार नहीं करता और सीमा संबंधी अपने ऐतिहासिक मानचित्रों एवं प्रशासनिक अभिलेखों के आधार पर इस क्षेत्र पर अपना दावा रखता है। कालापानी क्षेत्र रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भारत, नेपाल और चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के निकट स्थित हिमालयी क्षेत्र में आता है। कालापानी का महत्व केवल क्षेत्रीय स्वामित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी भौगोलिक स्थिति इसे भारत की उत्तरी सुरक्षा तथा भारत–चीन सीमा के संदर्भ में महत्वपूर्ण बनाती है। भारत की ओर से इस क्षेत्र में सुरक्षा बलों की उपस्थिति और प्रशासनिक नियंत्रण लंबे समय से रहा है। नेपाल दूसरी ओर ऐतिहासिक मानचित्रों और दस्तावेजों के आधार पर इस क्षेत्र को अपने भू-भाग का हिस्सा मानता है। इस प्रकार विवाद में कानूनी दावे के साथ-साथ वास्तविक प्रशासनिक नियंत्रण का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। लिपुलेख दर्रा इस विवाद का दूसरा महत्वपूर्ण केंद्र है। लिपुलेख भारत और चीन के तिब्बत क्षेत्र के बीच एक महत्वपूर्ण पर्वतीय दर्रा है और इसका उपयोग ऐतिहासिक रूप से व्यापार तथा कैलाश–मानसरोवर यात्रा के लिए किया जाता रहा है। भारत के लिए लिपुलेख का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह उत्तराखंड के माध्यम से तिब्बत की ओर जाने वाले मार्ग से जुड़ा है। भारत ने इस क्षेत्र में सड़क एवं संपर्क सुविधाओं के विकास को सीमा कनेक्टिविटी, तीर्थयात्रा और रणनीतिक आवश्यकताओं से जोड़ा है। दूसरी ओर नेपाल ने लिपुलेख क्षेत्र में भारत और चीन के बीच हुए समझौतों तथा गतिविधियों पर आपत्ति व्यक्त की है, क्योंकि नेपाल इसे अपने दावे वाले क्षेत्र से संबंधित मानता है। मई 2020 में भारत द्वारा कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए लिपुलेख तक सड़क संपर्क के उद्घाटन के बाद विवाद अधिक तीव्र हो गया। नेपाल ने इस पर कड़ी आपत्ति व्यक्त की और इसके बाद अपने राजनीतिक मानचित्र में कालापानी, लिपुलेख तथा लिम्पियाधुरा को शामिल किया। भारत के विदेश मंत्रालय ने 20 मई 2020 को नेपाल द्वारा जारी संशोधित मानचित्र पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि नेपाल का एकतरफा मानचित्र परिवर्तन ऐतिहासिक तथ्यों और प्रमाणों पर आधारित नहीं था तथा भारत ने नेपाल की ओर से किए गए ऐसे क्षेत्रीय दावों को स्वीकार नहीं किया। भारत ने यह भी कहा कि सीमा संबंधी लंबित मुद्दों का समाधान कूटनीतिक संवाद के माध्यम से किया जाना चाहिए। नेपाल ने जून 2020 में अपने संविधान की अनुसूची में संशोधन कर नए राजनीतिक मानचित्र को संवैधानिक आधार प्रदान किया। नेपाल के आधिकारिक कानूनी स्रोतों में वर्तमान संविधान एवं उसके संशोधनों का अभिलेख उपलब्ध है। इस कदम ने विवाद को केवल प्रशासनिक अथवा कूटनीतिक प्रश्न न रहने देकर राष्ट्रीय पहचान और संप्रभुता से जुड़े राजनीतिक मुद्दे का रूप दे दिया। नेपाल में विभिन्न राजनीतिक दलों और जनसमूहों ने इसे राष्ट्रीय क्षेत्रीय अखंडता से जोड़कर देखा, जबकि भारत ने इसे एकतरफा क्षेत्रीय दावे के रूप में माना।

लिम्पियाधुरा इस विवाद का विशेष रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि नेपाल का मुख्य तर्क महाकाली नदी के उद्गम से जुड़ा हुआ है। नेपाल की व्याख्या के अनुसार यदि महाकाली नदी का स्रोत लिम्पियाधुरा के निकट माना जाए तो नदी के पूर्व का व्यापक क्षेत्र नेपाल का हिस्सा बनता है। भारत की व्याख्या अलग है और वह सीमा के निर्धारण के लिए उपलब्ध ऐतिहासिक मानचित्रों, प्रशासनिक नियंत्रण और अन्य अभिलेखीय साक्ष्यों को महत्व देता है। इसलिए विवाद के समाधान के लिए केवल वर्तमान राजनीतिक मानचित्र पर्याप्त नहीं हैं; इसके लिए पुराने मानचित्रों, संधियों, राजस्व एवं प्रशासनिक अभिलेखों तथा सीमा-निर्धारण से संबंधित दस्तावेजों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। भारत–नेपाल सीमा विवाद की एक विशेषता यह भी है कि दोनों देशों के बीच सीमा का अधिकांश भाग खुला है। भारत के विदेश मंत्रालय के उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा है तथा सीमा के लगभग 98 प्रतिशत हिस्से से संबंधित स्ट्रिप मैप 2007 में सहमत एवं प्रारंभ किए गए थे, हालांकि उनके औपचारिक हस्ताक्षर का प्रश्न लंबित रहा है। सीमा स्तंभों के रखरखाव और सीमा प्रबंधन से जुड़े विषय द्विपक्षीय तंत्रों के माध्यम से उठाए जाते रहे हैं। यह स्थिति बताती है कि कालापानी–लिपुलेख विवाद पूरे भारत–नेपाल सीमा की सामान्य स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि एक विशिष्ट और संवेदनशील सीमा-क्षेत्र से संबंधित विवाद है। इस विवाद का सामरिक आयाम भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कालापानी और लिपुलेख क्षेत्र भारत–चीन सीमा के निकट स्थित होने के कारण भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से संवेदनशील हैं। भारत के लिए हिमालयी सीमा की निगरानी, सैन्य गतिशीलता, सीमा सड़क एवं संपर्क व्यवस्था तथा चीन की गतिविधियों पर नजर रखना महत्वपूर्ण है। नेपाल के लिए यह क्षेत्र राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का प्रश्न है। परिणामस्वरूप दोनों देशों की सुरक्षा धारणाएँ इस मुद्दे को और अधिक जटिल बनाती हैं। चीन का अप्रत्यक्ष भू-राजनीतिक आयाम भी इस विवाद को महत्वपूर्ण बनाता है। लिपुलेख क्षेत्र भारत–चीन–नेपाल के त्रि-जंक्शन के निकट है। भारत और चीन के बीच सीमा एवं संपर्क संबंधी गतिविधियों का प्रभाव नेपाल की चिंताओं पर पड़ता है। दूसरी ओर भारत के लिए नेपाल में चीन की बढ़ती आर्थिक एवं सामरिक उपस्थिति को देखते हुए हिमालयी क्षेत्र में स्थिरता का महत्व बढ़ गया है। इसलिए कालापानी विवाद को केवल भारत–नेपाल द्विपक्षीय सीमा विवाद के रूप में देखने के बजाय व्यापक हिमालयी भू-राजनीति और भारत–चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में भी समझना आवश्यक है। विवाद के समाधान के लिए भारत और नेपाल के बीच निरंतर कूटनीतिक संवाद सबसे उपयुक्त माध्यम है। दोनों देशों के बीच पहले से मौजूद संस्थागत तंत्रों, सीमा कार्य समूहों तथा उच्चस्तरीय राजनीतिक संवाद का उपयोग किया जा सकता है। भारत–नेपाल संबंधों की व्यापक प्रकृति को देखते हुए सीमा विवाद को अन्य क्षेत्रों—व्यापार, ऊर्जा, जल संसाधन, कनेक्टिविटी और जन-से-जन संबंधों—से अलग रखते हुए शांतिपूर्ण ढंग से हल करने की आवश्यकता है। भारत के लिए नेपाल की संप्रभुता एवं संवेदनशीलताओं का सम्मान करते हुए अपनी सुरक्षा आवश्यकताओं को स्पष्ट करना आवश्यक है, जबकि नेपाल के लिए भी ऐतिहासिक एवं कानूनी दावों को प्रमाणिक दस्तावेजों तथा द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से प्रस्तुत करना अधिक प्रभावी होगा। कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा विवाद भारत–नेपाल संबंधों में एक जटिल सीमा एवं सामरिक प्रश्न है। इसकी जड़ें ऐतिहासिक सीमा-निर्धारण, नदी के उद्गम की अलग-अलग व्याख्याओं और मानचित्र संबंधी मतभेदों में हैं, जबकि वर्तमान समय में इसका संबंध राष्ट्रीय संप्रभुता, हिमालयी सुरक्षा और भारत–चीन भू-राजनीति से भी जुड़ गया है। भारत और नेपाल के दीर्घकालिक एवं बहुआयामी संबंधों को देखते हुए इस विवाद का समाधान टकराव के बजाय ऐतिहासिक साक्ष्यों, पारस्परिक संवेदनशीलता, संस्थागत संवाद और शांतिपूर्ण कूटनीतिक प्रक्रिया के माध्यम से किया जाना दोनों देशों के हित में होगा।

3. निष्कर्ष

भारत और नेपाल के बीच कालापानी, लिपुलेख एवं लिम्पियाधुरा से संबंधित सीमा विवाद दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों का एक अत्यंत संवेदनशील और जटिल विषय है। भारत और नेपाल के बीच सदियों पुराने ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक संबंध होने के बावजूद सीमा से संबंधित यह विवाद समय-समय पर दोनों देशों के संबंधों में तनाव का कारण बनता रहा है। इस विवाद का स्वरूप केवल क्षेत्रीय स्वामित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके साथ राष्ट्रीय संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता, ऐतिहासिक दस्तावेज, मानचित्र, प्रशासनिक नियंत्रण तथा हिमालयी क्षेत्र की सामरिक

सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न जुड़े हुए हैं। इस विवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में 1816 की सुगौली संधि का विशेष महत्व है। दोनों देशों द्वारा इस संधि और उसके बाद के मानचित्रों एवं अभिलेखों की अलग-अलग व्याख्या किए जाने के कारण सीमा-निर्धारण को लेकर मतभेद उत्पन्न हुए हैं। विशेष रूप से महाकाली नदी के उद्गम की पहचान विवाद का केंद्रीय बिंदु है। नेपाल लिम्पियाधुरा को महाकाली नदी का प्रमुख स्रोत मानते हुए कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा को अपने क्षेत्र का हिस्सा मानता है, जबकि भारत इन दावों को स्वीकार नहीं करता और ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा लंबे समय से चले आ रहे प्रशासनिक नियंत्रण को अपने पक्ष का आधार मानता है। इस प्रकार विवाद में ऐतिहासिक एवं कानूनी व्याख्याओं के साथ वास्तविक प्रशासनिक नियंत्रण का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। लिपुलेख का महत्व इस विवाद को और अधिक सामरिक बना देता है। यह क्षेत्र भारत–चीन सीमा के निकट स्थित होने के कारण भारत की उत्तरी सुरक्षा और सीमा प्रबंधन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वहीं नेपाल के लिए यह क्षेत्र उसकी क्षेत्रीय संप्रभुता और राष्ट्रीय पहचान से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त हिमालयी क्षेत्र में चीन की बढ़ती आर्थिक एवं सामरिक गतिविधियों ने इस सीमा विवाद को व्यापक भारत–नेपाल–चीन भू-राजनीतिक संदर्भ से जोड़ दिया है। इसलिए इस विवाद को केवल द्विपक्षीय सीमा विवाद के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा; इसके सामरिक एवं क्षेत्रीय प्रभावों को भी समझना आवश्यक है।भारत और नेपाल दोनों के दीर्घकालिक हित इसी में हैं कि सीमा विवाद को राजनीतिक टकराव अथवा जनभावनाओं के उग्र प्रदर्शन के बजाय संस्थागत एवं कूटनीतिक प्रक्रिया के माध्यम से हल किया जाए। ऐतिहासिक संधियों, पुराने मानचित्रों, प्रशासनिक अभिलेखों, राजस्व दस्तावेजों और अन्य प्रमाणों का संयुक्त एवं निष्पक्ष अध्ययन समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। दोनों देशों को सीमा संबंधी संवेदनशील मुद्दों को अपने व्यापक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और सुरक्षा सहयोग से अलग रखते हुए संबंधों की सकारात्मक दिशा को बनाए रखना चाहिए। लिपुलेख एवं लिम्पियाधुरा विवाद भारत–नेपाल संबंधों के लिए चुनौती अवश्य है, लेकिन यह दोनों देशों के बीच व्यापक सहयोग की संभावनाओं को समाप्त नहीं करता। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा, जन-से-जन संपर्क, व्यापार, ऊर्जा, जल संसाधन, पर्यटन और सुरक्षा सहयोग जैसी साझा आवश्यकताएँ दोनों देशों को एक-दूसरे से गहराई से जोड़ती हैं। अतः भविष्य में पारस्परिक सम्मान, संवेदनशीलता, ऐतिहासिक तथ्यों के वस्तुनिष्ठ अध्ययन और निरंतर उच्चस्तरीय संवाद के माध्यम से इस विवाद का शांतिपूर्ण समाधान खोजा जाना चाहिए। ऐसा समाधान न केवल भारत–नेपाल संबंधों को स्थिरता प्रदान करेगा, बल्कि पूरे हिमालयी क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और क्षेत्रीय सहयोग को भी मजबूत करेगा।

संदर्भ-सूची

Ministry of External Affairs, Government of India. *India–Nepal Relations.* Government of India. MEA — India–Nepal Relations

1. **Ministry of External Affairs, Government of India.** *India–China Relations.* Government of India. MEA — India–China Relations
2. **Ministry of Foreign Affairs, Government of Nepal.** *Nepal–China Relations.* Government of Nepal, 2026.
3. **Ministry of Foreign Affairs, Government of Nepal.** *Memorandum of Understanding between the Government of Nepal and the Government of the People's Republic of China on Cooperation under the Belt and Road Initiative.* 2017.
4. **Ministry of Foreign Affairs, Government of Nepal.** *Framework for Belt and Road Cooperation between the Government of Nepal and the Government of the People's Republic of China.* 2024.
5. **Ministry of Foreign Affairs, Government of Nepal.** *Joint Press Statement between the People's Republic of China and Nepal.* 2015.

6. **Ministry of Foreign Affairs, Government of Nepal.** *Valedictory Address: International Conference on Belt and Road Initiative: Opportunities and Implications for Nepal and the Region.* Government of Nepal.
7. **World Bank.** *Nepal Development Update / Nepal Country Economic Reports.* World Bank, Washington, D.C. World Bank — Nepal
8. **Asian Development Bank (ADB).** *Nepal: Country Partnership Strategy and Economic/Development Reports.* Asian Development Bank. Asian Development Bank — Nepal
9. **Institute for Defence Studies and Analyses (IDSA).** *India–Nepal Relations, Nepal–China Relations and Himalayan Geopolitics: Strategic Studies and Research Papers.* New Delhi: Manohar/IDSA publications. MP-IDSA

Cite the Article:

यादव, डॉ. महेंद्र प्रताप, दूबे, सतीश कुमार. (2026). भारत–नेपाल संबंधों में चीन की बढ़ती भूमिका: सामरिक, आर्थिक एवं भू-राजनीतिक चुनौतियों का अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 3(4) 746-752, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, June-2026. **DOI: -** https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.81

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. महेंद्र प्रताप यादव[1], सतीश कुमार दूबे[2]

For publication of research paper title

भारत–नेपाल संबंधों में चीन की बढ़ती भूमिका: सामरिक, आर्थिक एवं भू-राजनीतिक चुनौतियों का अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.69

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.81